मालवा-निमाड़
जाग्रत मालवा
5 मई 2023
मूल्य : 5.00 रुपये
पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

इन्दौर की रानी देवी अहिल्याबाई होलकर, जिन्होंने देश भर में अनेक मंदिरों, घाटों व हिन्दुत्व के प्रतीकों का निर्माण, संरक्षण व जीर्णोद्धार कराया। रणनीतिक विचार कर महेश्वर को राजधानी बनाया। महिलाओं को स्वावलम्बी बनाया। इस अंक में पढ़िये भारत की ऐसी महान बेटी व न्याय की सजीव मूर्ति के बारे में...

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

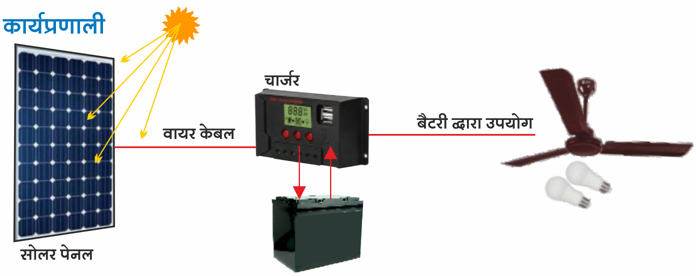

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500

ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 मार्च 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 11
•••
ज्येष्ठ/कृष्ण
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर मराठा साम्राज्य की यशस्वी महारानी तथा प्रसिद्ध सूबेदार श्री मल्हारराव होलकर के पुत्र खाण्डेराव की धर्मपत्नी थीं। उन्होनें माँ नर्मदा के किनारे महेश्वर को राजधानी बनाकर शासन किया। अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भी भारतभर के प्रसिद्ध तीर्थों और अनेक स्थानों पर मंदिर बनावाए, घाट बनवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया। काशी विश्वनाथ में शिवलिंग की स्थापना कर भव्य मंदिर बनवाया। उन्होंने कई अन्न क्षेत्र तथा प्यासे के लिए प्याऊ तथा मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति कर शास्त्रों के अध्ययन, मनन, चिन्तन की व्यवस्था की। आत्म प्रतिष्ठा और प्रशंसा के झूठे मोह को त्यागकर सदैव न्याय करने का मरते दम तक प्रयत्न करती रहीं। उनके जीवनकाल में ही उन्हें जनता देवी समझने लगी थी। इतना बड़ा व्यक्तिव जनता ने पहली बार देखा था। जब चारों ओर शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहे थे। प्रजाजन साधारण गृहस्थ किसान मजदूर अत्यन्त ही दीन-हीन अवस्था मे थे, न्याय में ना शक्ति रही थी और ना विश्वास, ऐसे काल में उन परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो किया वह अतुल्य एवं अविस्मणीय है। अहिल्या बाई होल्कर भगवान शंकर की अनन्य भक्त थीं। उनकी रियासत के हर सरकारी कागज पर हुजूर शंकर लिखा जाता था। नियम कायदों का कठोरता से पालन करती थीं। एक बार उन्होंने अपने पति तक को अग्रिम वेतन देने से मना कर दिया था। वे जनता के खून-पसीने से कमाए धन की पाई-पाई का हिसाब रखती थीं, पति खाण्डेराव की युद्ध में वीरगति प्राप्त होने पर ससुर मल्हारराव होलकर के कहने पर अहिल्या सती नहीं हुईं जबकि अन्य रानियां सती हो जाती थीं, इसके बाद ससुर मल्हाराव होलकर ने बहू अहिल्या देवी को होलकर राज्य की कमान सौंप दी। अहिल्याबाई अत्यन्त न्याय प्रिय थीं। नियमों का पालन करवाने में पति और पुत्र के प्रति भी कठोरता रखती थीं। इन्दौर का नाम आते ही अहिल्यादेवी का स्मरण हो आता है। मालवा और निमाड़ देवी स्वरूपा माँ अहिल्याबाई होलकर को पाकर अपने आपको गौरवान्वित और धन्य समझता है।

माँ अहिल्या देवी के चरणों में सादर नमन।

राज माता अहिल्या देवी होलकर

डॉ. सोनाली सिंह नरगुदे

अहिल्याबाई होल्कर (1725-1795) एक महान शासक थीं और मालवा प्रांत की महारानी। लोग उन्हें राजमाता अहिल्यादेवी होल्कर नाम से भी जानते हैं और उनका जन्म महाराष्ट्र के चोंडी गांव में 1725 में हुआ था। युवा अहिल्यादेवी के चरित्र और सरलता ने मल्हारराव होल्कर को प्रभावित किया। वे पेशवा बाजीराव की सेना में एक कमांडर के तौर पर काम करते थे। उन्हें अहिल्या इतनी अच्छी लगीं कि उन्होंने उनकी शादी अपने बेटे खांडेराव से करवा दी। इस तरह अहिल्याबाई एक दुल्हन के तौर पर मराठा समुदाय के होल्कर राजघराने में पहुंची। उनके पति की मौत 1754 में कुंभेर की लड़ाई में हो गई थी। ऐसे में अहिल्यादेवी पर जिम्मेदारी आ गई। उन्होंने अपने ससुर के कहने पर न केवल सैन्य मामलों में बल्कि प्रशासनिक मामलों में भी रुचि दिखाई और प्रभावी तरीके से उन्हें अंजाम दिया। मल्हारराव के निधन के बाद उन्होंने पेशवाओं की गद्दी से आग्रह किया कि उन्हें क्षेत्र की प्रशासनिक बागडोर सौंपी जाए। मंजूरी मिलने के बाद 1766 में रानी अहिल्यादेवी मालवा की शासक बन गई। उन्होंने तुकोजी होल्कर को सैन्य कमांडर बनाया। उन्हें उनकी राजसी सेना का पूरा सहयोग मिला। अहिल्याबाई ने कई युद्धों का नेतृत्व किया। वे एक साहसी योद्धा थीं और बेहतरीन तीरंदाज। हाथी की पीठ पर चढ़कर लड़ती थीं। हमेशा आक्रमण करने को तत्पर भील और गोंड़ों से उन्होंने कई बरसों तक अपने राज्य को सुरक्षित रखा।

रानी अहिल्याबाई अपनी राजधानी महेश्वर ले गईं। वहां उन्होंने 18वीं सदी का बेहतरीन और आलीशान अहिल्या महल बनवाया। पवित्र नर्मदा नदी के किनारे बनाए गए इस महल के इर्द-गिर्द बनी राजधानी की पहचान बनी टेक्सटाइल इंडस्ट्री। एक बुद्धिमान, तीक्ष्ण सोच और स्वस्फूर्त शासक के तौर पर अहिल्याबाई को याद किया जाता है। हर दिन वह अपनी प्रजा से बात करती थीं उनकी समस्याएं सुनती थीं। उनके कालखंड (1767-1795) में रानी अहिल्याबाई ने ऐसे कई काम किए कि लोग आज भी उनका नाम लेते हैं। अपने साम्राज्य को उन्होंने समृद्ध बनाया। उन्होंने सरकारी पैसा, बेहद बुद्धिमानी से कई किले, विश्राम गृह, कुएं और सड़कें बनवाने पर खर्च किया। वह लोगों के साथ त्यौहार मनाती और हिंदू मंदिरों को दान देती थीं।

एक महिला होने के नाते उन्होंने विधवा महिलाओं को अपने पति की संपत्ति को हासिल करने और बेटे को गोद लेने में मदद की। इंदौर को एक छोटे से गांव से समृद्ध और सजीव शहर बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कई मंदिरों

का जीर्णोद्धार किया। उनका सबसे यादगार काम रहा, तकरीबन सभी बड़े मंदिरों और तीर्थस्थलों पर निर्माण। हिमालय से लेकर दक्षिण भारत के कोने-कोने तक उन्होंने इस पर खूब पैसा खर्च किया। काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारका, बद्रीनारायण, रामेश्वर और जगन्नाथपुरी के विख्यात मंदिरों में उन्होंने खूब काम करवाए। महारानी अहिल्याबाई की पहचान एक विनम्र एवं उदार शासक के रुप में थी। उनके हृदय में जरूरतमंदों, गरीबों और असहाय व्यक्ति के लिए दया और परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने समाजसेवा के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। अहिल्याबाई हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती रहती थीं, इसके साथ ही वे गरीबों और निर्धनों की हर संभव मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं। उन्होंने समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति पर भी खासा काम किया और उनके लिए उस वक्त बनाए गए कानून में बदलाव भी किया था। दरअसल, अहिल्याबाई के मराठा प्रांत का शासन संभालने से पहले यह कानून था कि अगर कोई महिला विधवा हो जाए और उसका पुत्र न हो, तो उसकी पूरी संपत्ति सरकारी खजाने या फिर राजकोष में जमा कर दी जाती थी। लेकिन अहिल्याबाई ने इस कानून को बदलकर विधवा महिला को अपनी पति की संपत्ति लेने का हकदार बनाया। इसके अलावा उन्होंने महिला शिक्षा पर भी खासा जोर दिया। अपने जीवन में तमाम परेशानियां झेलने के बाद जिस तरह महारानी अहिल्याबाई ने अपनी अदम्य नारी शक्ति का इस्तेमाल किया था, वो काफी प्रशंसनीय है। अहिल्याबाई कई महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। अहिल्याबाई होल्कर का चमत्कृत कर देने वाले और अलंकृत शासन 1795 में खत्म हुआ, जब उनका निधन हुआ। उनकी महानता और सम्मान में भारत सरकार ने 25 अगस्त 1996 को उनकी याद में एक डाक टिकट जारी किया।

अहिल्याबाई ने पाई चौतरफा ख्याति

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में अहिल्याबाई का जिक्र करते हुए कहा, 'आज मैं लोकमाता अहिल्याबाई होलकर को भी प्रणाम करता हूं, जिन्होंने विश्वनाथ से लेकर सोमनाथ तक, कितने ही मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया। प्राचीनता और आधुनिकता का जो संगम उनके जीवन में था, आज देश उसे अपना आदर्श मानकर आगे बढ़ रहा है।'

काशी विश्वनाथ और सोमनाथ - इन दो हिंदू मंदिरों के जीर्णोद्धार और पुनर्निर्माण के लिए अहिल्याबाई का नाम बहुत सम्मान से लिया जाता है। ये दोनों ही मंदिर शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में आते हैं। कहा जाता है कि सोमनाथ का मंदिर ईसा के पूर्व भी स्थित था। मंदिर पर बार-बार आक्रमण हुए। प्रतिहार राजा नागभट्ट ने 815 में तीसरी बार इसका पुनर्निर्माण कराया। वहीं 1024 और 1026 में अफगानिस्तान के गजनी के सुल्तान महमूद गजनवी ने भी सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया। इसके बाद मंदिर को तहस-नहस करते हुए लूट लिया गया। इसके तकरीबन 750 साल बाद 1783 में अहिल्याबाई ने पुणे के पेशवा के साथ मिलकर ध्वस्त मंदिर के पास अलग मंदिर का निर्माण कराया। मंदिर के गर्भगृह को जमीन के अंदर बनाया गया। मूल मंदिर स्थल पर सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट का बनाया नया मंदिर स्थापित है।

काशी विश्वनाथ मंदिर के वर्तमान स्वरूप का निर्माण 1780 में अहिल्याबाई ने ही करवाया था। एक सामान्य परिवार से एक राज्य की शासिका बनने के बाद भी उनका जीवन बहुत ही सादगी एवं सरलता का था। वह अपनी न्यायप्रियता के लिए भी जानी जाती थीं। उन्होंने कई न्यायालय स्थापित किए। अपने जीवनकाल में ही उन्होंने अपने पिता समान ससुर, अपने पति, अपने पुत्र मालेराव, कन्या मुक्ताबाई एवं दामाद की मृत्यु को देखा, फिर भी बिना विचलित हुए बहुत ही साहस से शासनकार्य करते हुए अपना जीवन मानवता के लिए समर्पित कर दिया। वनों में निवास करने वाले कई जनजातीय समुदाय के लोगों को ग्रामीण अंचलों में बसाकर उन्हें कृषि कार्य के लिए प्रेरित किया। भील एवं गोंड जनजाति समुदाय के लोगों को अपने साथ किया। इनकी मृत्यु 1795 ई. में हुई।

भारतीय परिवार अवधारणा के विरुद्ध षड्यंत्र समलैंगिक विवाह

सनी राजपूत, उज्जैन

भारतीय समाज की अंतिम इकाई परिवार को माना गया है। परिवारविहीन समाज की परिकल्पना भारतीय अवधारणा के विरुद्ध है। भारतीय संस्कृति और मान्यताओं के आधार पर परिवार में पति-पत्नी और उनकी संतानों को स्थान दिया गया है। यह परिवार की मूल इकाई है। उसके उपरांत परिवार के अन्य सदस्यों को भी परिवार का वृहद स्वरूप कहा गया हैं। परिवार में पति के रूप में पुरुष एवं पत्नी के रूप में स्त्री को मान्यता प्रदान की गयी है। इसी आधार पर भारतीय संविधान के अनुसार बने विशेष विवाह अधिनियम 1954 में भी पुरुष एवं स्त्री के आपस में विवाह की बात की गयी है। इसमें भी जैविक रूप से स्त्री-पुरुष को विवाह की सहमति दी गयी है। भारतीय संविधान के अनुसार भी परिवार की कल्पना उसी प्रकार से की गयी है। जिस प्रकार से भारतीय शास्त्रों और संस्कृति-परम्परा में बताया गया है।

किंतु विदेशों में चलने वाले उनके स्थानीय मापदंडों को भारत के संदर्भ में जबर्दस्ती लागू करवाने के कुंठित प्रयास लगातार हो रहे हैं। ऐसा ही एक अवैध प्रयास समलैंगिक विवाह के रूप मे सामने आता दिख रहा है। इसमे आश्चर्य की बात यह है कि भारत मे एक ऐसा वर्ग है जो ऐसे सभी कुंठित प्रयासों को अमल में लाने के लिए तैयार बैठा रहता है। एक ओर जहां भारतीय समाज में विवाह के लिए गोत्र परंपरा का भी निर्वहन होता हो, जिसमें वर-वधू पक्ष की सात पीढ़ियों के गोत्र तक का मिलान करने के बाद एक पुरुष और स्त्री के विवाह की सहमति बनती है। जहां भारत में विवाह एक संस्कार के रूप मे स्वीकार किया गया है, ऐसे भारतीय समाज पर विदेशों के प्रभाव में आकर समलैंगिक विवाह को थोपने का अवैध प्रयास करना एक प्रकार की कुंठा को व्यक्त करने का तरीका लगता है।

भारतीय समाज के भीतर परिवार संस्था न केवल समाज को एकसूत्र में बांधने का काम करती है बल्कि भारत की मूल संस्कृति, रीति-रिवाज और परम्पराओं को भी एक पीढ़ि से दूसरी पीढ़ि को हस्तांतरित करने का काम करती है। परिवार संस्था के कारण ही भारत वर्तमान में भी अपने उसी मूल स्वरूप में विद्यमान है, जैसा कि हजारों-हजार वर्षो पहले भी था। परिवार संस्था, भारतीय समाज की शक्ति और संगठन का स्त्रोत है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में ऐसे अनेक काम हैं, जिन्हें केवल परिवार में महिलाओं के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। भारतीय परिवार में महिला केवल चूल्हे-चौके

तक ही सीमित नहीं होती है।

परिवार में होने वाले वैदिक और धार्मिक अनुष्ठान और पूजा पद्धति में महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती है। भारतीय परिवार में सदस्यों के कर्तव्यों का वर्गीकरण बेहतर प्रकार से किया गया है। जिस प्रकार अन्य मजहबों और रिलिजनों में विवाह एक समझौता है या फिर विवाह केवल भोग का एक साधन है, उसके विपरीत भारत में विवाह के अनेक आयाम हैं। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि भारतीय विवाह परंपरा में विवाह के बाद विच्छेद का कहीं कोई उल्लेख नहीं हैं। तलाक और डिवोर्स, दोनों ही शब्द गैर-भारतीय हैं।

भारतीय समाज पर न्यायालय के माध्यम से पीछे के दरवाजे से समलैंगिक विवाह जैसे विदेशी प्रभाव से ग्रसित चलन को भारत में कानूनी मान्यता का सभी को विरोध करने की आवश्यकता है। समलैंगिक विवाह के द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त परिवार व्यवस्था को समाप्त करने के षड्यंत्र को असफल करना आवश्यक है। जिसके विरुद्ध समाज के सभी वर्गों को आवाज उठाने के लिए आगे आने की जरूरत है।

राष्ट्रनायक विनायक दामोदर सावरकर

डॉ. सुब्रतो गुहा

पुण्यभूमि भारत को विदेशी ब्रिटिश शासन की परतंत्रता से मुक्त करवाने वाले अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में अग्रणी पंक्ति में स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की गणना होती है। 28 मई सन् 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले में भागुर गांव में जन्म लेने वाले स्वातंत्र्यवीर सावरकर को इस मई माह में कृतज्ञ राष्ट्र उनकी 141 वीं जयंती पर उनका कृतज्ञ स्मरण कर रहा है। सनातन धर्म व संस्कृति के गुण उन्हें उनके पूज्य पिता दामोदर पंत सावरकर तथा माता राधा से प्राप्त हुए जो जीवन के संघर्षपूर्ण समय में उनका संबल बने। संघर्ष ने तो उनके जीवन द्वार पर दस्तक मात्र नौ वर्ष की आयु में ही दे दी थी जब उनकी पूज्य माताजी का देहावसान हुआ और फिर मात्र सोलह वर्ष की आयु में उनके पूज्य पिता हमेशा के लिए उनसे बिछड़ गए। ऐसी विपत्ति के समय उनके बड़े भाई गणेश ने ही बालक विनायक की समस्त जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली।

प्रारम्भिक शिक्षा महाराष्ट्र के नासिक और पुणे में पूर्ण करने के पश्चात् युवा विनायक ने लंदन जाकर बार एट लॉ परीक्षा उत्तीर्ण की तथा बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की। लंदन में पढ़ाई के दौरान ही वे अनेक भारतीय मूल के राष्ट्रवादी चिन्तकों के संपर्क में आए तथा उन्होंने भारत माता को विदेशी शासन की जंजीरों से मुक्त करने की शपथ ली। सन् 1904 में क्रान्तिकारी संगठन **'अभिनव भारत'** की स्थापना कर उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध अनेक क्रान्तिकारी अभियानों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया - जिसके फलस्वरूप वे शीघ्र ही तत्कालीन क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्त्रोत बन गए। अभिनव भारत के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर अनेक अवसरों पर उन्होंने विदेशी वस्त्रों तथा विदेशी वस्तुओं की सामूहिक होली जलाकर राष्ट्रवासियों को स्वदेशी अपनाने का संदेश दिया। अपनी पुस्तक 1851 का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम के माध्यम से उन्होंने भारतवासियों को ब्रिटिश शासन के विरूद्ध 1857 की क्रान्ति के अनेक अनजाने पहलुओं से परिचित करवाया।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में स्वातंत्र्यवीर ऐसे एकमात्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिन्हें दो कालापानी की सजा दी गई थी। अंडमान द्वीप पर कालापानी सजा के दौरान उन्हें अमानवीय अत्याचार सहने पड़े, बैलों की जगह उन्हें कोल्हू में जोतकर सुबह से लेकर शाम तक परिश्रम करवाया जाता था तथा एक क्षण भी थककर रूकने पर कोड़े मारकर पीठ की चमड़ी उधेड़ दी जाती थी। इतनी पीड़ादायक स्थिति में भी ऊँचे मनोबल के साथ वे अपने साथी कैदियों के बीच उद्घोष करते-

" गरज उठे जयकार क्रान्ति की गरज उठें जयकार- खुली छाती पर हँसकर झेलें भीषण वज्र प्रहार।"

अंततः सन् 1924 में उन्हें कारागार से मुक्ति मिली तथा इसके बाद के वर्षों में वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के साथ ही समाज सुधारक की भी भूमिका में भी रहे तथा एक जातिगत भेदभाव से मुक्त समरस हिन्दू समाज का संदेश गांव-शहर-कस्बों में प्रचारित करते रहे। न केवल वे अनेक मंदिरों में समस्त जाति के हिन्दुओं को प्रवेश दिलवाने में सफल रहे- बल्कि साथ ही समस्त जातियों के सामूहिक पूजा पाठ हेतु पतित पावन मंदिर की स्थापना के माध्यम से उन्होंने जातिगत बंधनों को तोड़ने का सार्थक प्रयास किया।

सन् 1937 में हिन्दू महासभा के अखिल भारतीय अध्यक्ष निर्वाचित होने के पश्चात् अपने राष्ट्रिय दायित्वों के साथ-साथ सामाजिक विभाजन का 1947 में उन्होंने प्रखर विरोध किया था। हिन्दुत्व की मूलभूत अवधारणाओं को स्पष्ट करते हुए उन्होंने हिन्दुत्व के पंच प्राण नामक पुस्तक की रचना की जो अत्यधिक लोकप्रिय हुई। यद्यपि 1966 को वे इस मृत्यलोक से स्वर्गलोक की ओर प्रस्थान कर गए, तथापि उनके कालजयी राष्ट्रवादी विचार युग-युगान्तर तक भारतवंशियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर (उपाख्य : हरिभाऊ वाकणकर)

भारतीय सभ्यता न केवल लाखों वर्ष प्राचीन है, अपितु वह अत्यन्त समृद्ध भी रही है। इसे विश्व के सम्मुख लाने में जिन लोगों का विशेष योगदान रहा, उनमें श्री विष्णु श्रीधर (हरिभाऊ) वाकणकर का नाम उल्लेखनीय है।

हरिभाऊ का जन्म 4 मई, 1919 को नीमच (जिला मंदसौर, म.प्र.) में हुआ था। इतिहास, पुरातत्व एवं चित्रकला में विशेष रुचि होने के कारण अपनी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर वे उज्जैन आ गये और विक्रमशिला विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरी की। इसके बाद वे वहां पर ही प्राध्यापक हो गये।

उज्जैन के पास दंतेवाड़ा ग्राम में हुई खुदाई के समय उन्होंने अत्यधिक श्रम किया। 1958 में वे एक बार रेल से यात्रा कर रहे थे कि मार्ग में उन्होंने कुछ गुफाओं और चट्टानों को देखा। साथ के यात्रियों से पूछने पर पता लगा कि यह भीमबेटका (भीम बैठका) नामक क्षेत्र है तथा यहां गुफा की दीवारों पर कुछ चित्र बने हैं; पर जंगली पशुओं के भय से लोग वहां नहीं जाते।

हरिभाऊ की आंखों में यह सुनकर चमक आ गयी। रेल कुछ देर बाद जब धीमी हुई, तो वे चलती गाड़ी से कूद गये और कई घंटे की चढ़ाई चढ़कर उन पहाड़ियों पर जा पहुंचे। वहां गुफाओं पर बने मानव और पशुओं के चित्रों को देखकर वे समझ गये कि ये लाखों वर्ष पूर्व यहां बसने वाले मानवों द्वारा बनाये गये हैं। वे लगातार 15 वर्ष तक यहां आते रहे। इस प्रकार इन गुफा-चित्रों से संसार का परिचय हुआ। इससे हरिभाऊ को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली और भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया।

संघ के स्वयंसेवक होने के नाते वे सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय थे। वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, म.प्र. के अध्यक्ष रहे। विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना के बाद 1966 में प्रयाग में जब प्रथम **विश्व हिन्दू सम्मेलन** हुआ, तो एकनाथ रानाडे ने उन्हें वहां प्रदर्शनी बनाने तथा सज्जा करने के लिए भेजा। फिर तो ऐसे हर सम्मेलन में हरिभाऊ की उपस्थिति अनिवार्य हो गयी। इसके बाद वे विश्व के अनेक देशों में गये और वहां भारतीय संस्कृति, कला, इतिहास और ज्ञान-विज्ञान आदि पर व्योयान दिये। 1981 में **'संस्कार भारती'** की स्थापना होने पर उन्हें उसका महामंत्री बनाया गया।

एक बार वे लंदन के पुरातत्व संग्रहालय में शोध कर रहे थे। वहां उन्होंने सरस्वती की वह प्राचीन प्रतिमा देखी, जिसे धार की भोजशाला पर हमला कर मुस्लिमों ने तोड़ा था। धार में ही जन्मे हरिभाऊ यह देखकर भावुक हो उठे। अगले दिन वे संग्रहालय में गये और प्रतिमा पर एक पुष्प चढ़ाकर वंदना करने लगे।

उनकी आंखों में आंसू देखकर संग्रहालय का प्रमुख बहुत प्रभावित हुआ। उसने हरिभाऊ को एक अल्मारी दिखाई, जिसमें अनेक अंग्रेज अधिकारियों की डायरियां रखीं थीं। इनमें वास्कोडिगामा की डायरी भी थी, जिसमें उसने स्पष्ट लिखा है कि वह मसालों के एक व्यापारी 'चंदन' के जलयान के पीछे चलकर भारत में कोचीन के तट पर आया। कैसी मूर्खता है कि इस पर भी इतिहासकार उस पुर्तगाली डाकू को भारत की खोज का श्रेय देते हैं।

एक बार हरिभाऊ एक हिन्दू सम्मेलन में भाग लेने के लिए सिंगापुर गये। वहां उनके होटल से समुद्र का मनमोहक दृश्य हर समय दिखाई देता था। चार अप्रैल 1988 को जब वे निर्धारित समय पर सम्मेलन में नहीं पहुंचे, तो लोगों ने होटल जाकर देखा। हरिभाऊ बालकनी में एक कुर्सी पर बैठे थे। घुटनों पर रखे एक बड़े कागज पर अठखेलियां करते समुद्र का आधा चित्र बना था, हाथ की पेंसिल नीचे गिरी थी। इस प्रकार चित्र बनाते समय हुए भीषण हृदयाघात ने उस कलासाधक के जीवन के चित्र को ही सम्पूर्ण कर दिया।

लोक परम्परा का विराट प्रकटीकरण है, उज्जैन की पंचक्रोशी यात्रा

अचला शर्मा, ऋषिश्वर

सप्तपुरियों में षष्ठम क्रमांक पर आने वाली अवन्तिकापुरी अर्थात आधुनिक उज्जैन में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली पंचक्रोशी यात्रा भारतीय समाज की आस्था, साहचर्य और समरसतापूर्ण पुण्यमयी स्वभाव का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। वैशाख कृष्ण दशमी से चतुर्दशी तक यह पञ्च दिवसीय यात्रा कुल 118 किलोमीटर की रहती है एवम् अमावस्या को मोक्षदायिनी क्षिप्रा मैया में स्नान दर्शन पूजन के साथ इसका समापन होता है। इसे पंचेशानि यात्रा भी कहा जाता है यहां पंच ईशान से तात्पर्य लिङ्ग रूपी महादेव है, इनके दर्शन-पूजन की यात्रा ही पंचेशानि यात्रा है।

उज्जैन जिसे महाकाल वन भी कहा जाता है यहां वैसे तो श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग सहित अनेकानेक महादेव मंदिर हैं, परन्तु इनमें 84-चौरासी महादेव प्रतिष्ठित हैं और सम्पूर्ण पंचक्रोशी यात्रा में इन सभी का दर्शन-पूजन किया जाता है। इनमें भी ज्योतिर्लिंग श्री महाकालेश्वर से समान दूरी पर चारों दिशाओं में स्थित चार महादेव द्वारपाल कहलाते हैं। यह उन्हीं चौरासी महादेव में से हैं, पूर्व में पिंगलेश्वर, दक्षिण में कायावरुहणेश्वर, पश्चिम में बिल्वेश्वर व उत्तर में दर्दुरेश्वर का मंदिर है। और इन चौरासी महादेव का निर्धारित मास, तिथि पर पूजन-दर्शन का महत्व है जो इस यात्रा का मूल कारण है। इस यात्रा का प्रारंभ स्थानीय पटनी बाजार, नागनाथ की गली स्थित नागचंद्रेश्वर मन्दिर से होता है यह 84 महादेव मे उन्नीसवें क्रम पर आने वाले महादेव हैं। शिप्रा स्नान के बाद महाकालेश्वर दर्शन पश्चात पंचकोशी यात्रा नागचंद्रेश्वर

महादेव की पूजा-अर्चना-दर्शन के साथ आरंभ और पूर्ण भी होती है। क्योंकि प्रत्येक पंचकोशी यात्री श्रीफल यहां अर्पित कर अश्व के समान शक्ति महादेव से मांगता है और पूर्ण होने पर उस शक्ति को मिट्टी के अश्व के रूप में पुनः नागचंद्रेश्वर को अर्पित कर अपने वचन को पूर्ण करता है। भारतीय समरस समाज की झांकी देखनी हो तो इस यात्रा में देखिये। रात्रि विश्राम में महिलाएं भोजन निर्माण व कीर्तन करती हैं, पुरुष कहीं भजन तो कहीं मानस पाठ करते दिखाई देते हैं। कोई नहीं पूछता कि उसका वर्ग क्या है? वर्ण क्या है और सामाजिक,आर्थिक स्तर क्या है। सेवक समाज भी इनकी सेवा कर स्वयं को धन्य मानता है और थोड़ा सा पुण्य उसे भी प्राप्त हो रहा है, सोच कर हर्षित होता है। भारतीय संस्कृति की ऐसी परंपराएं ही तो हैं जो एक भारत, श्रेष्ठ भारत की उक्ति को चरितार्थ करती आई हैं और जब तक अथक कष्ट सह कर भी श्रद्धालु चलते रहेंगे, भारतीयों की संस्कृतिगाथा भी चलती रहेगी।

किसान अनुदान योजना

किसान अनुदान योजना मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई एक योजना है जो मध्य प्रदेश राज्य के किसानों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने का उद्देश्य रखती है। इस योजना के अंतर्गत, मध्य प्रदेश के किसानों को खेती से संबंधित विभिन्न आवश्यकताओं के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इसके अलावा, यह योजना किसानों को नवीनतम तकनीकी सहायता और खेती से संबंधित अन्य फायदे भी प्रदान करती है।

किसान अनुदान योजना के अंतर्गत, मध्य प्रदेश के किसानों को धान, गेहूं, मक्का, चना, तिल, लहसुन और प्याज जैसी फसलों के लिए अनुदान प्रदान किया जाता है। इसके अलावा, योजना के अंतर्गत किसानों को खरपतवार, बीमा, कृषि उपकरणों की खरीद, खेतों के निर्माण और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित विभिन्न विषयों में सहायता दी जाती है। आवेदक को कुछ निर्दिष्ट योग्यता मानदंडों को पूरा करने की जरूरत होती है। इन मानदंडों में से कुछ मुख्य शामिल हैं

- आवेदक का मध्य प्रदेश राज्य का किसान होना चाहिए।
- आवेदक की आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।
- आवेदक को उस फसल की खेती करनी चाहिए, जिसके लिए वह योजना का लाभ लेना चाहता है।
- आवेदक के पास खेती से संबंधित किसी भी बैंक से कोई ऋण नहीं होना चाहिए।
- आवेदक का बैंक खाता होना जरूरी होता है।
- आवेदक को वही समय फसल उगाने की योग्यता होनी चाहिए, जिस समय योजना के तहत अनुदान प्रदान किया जाता है।

इसके अलावा योजना के लिए आवेदन करने के लिए आवेदक को अपने जिले के कृषि विभाग के पास जाना होगा और उन्हें अपनी आवश्यकताओं की जानकारी देनी होगी। उन्हें आवेदन पत्र भरना होगा और साथ ही अपनी योग्यता मानदंडों को पूरा करने के सबूत भी जमा करने होंगे। किसान अनुदान योजना के तहत, पात्र किसानों को अधिकतम राशि 2 लाख रूपये तक का ऋण प्रदान किया जाता है। इस ऋण के ब्याज दर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है। ऋण भुगतान की अवधि 5 वर्ष से अधिक नहीं होती है और इसकी भुगतान अवधि में ब्याज का भुगतान शामिल होता है।

इस योजना के तहत अनुदान प्रदान करने के लिए, मध्य प्रदेश सरकार ने समूह बैंकों और एजेंसियों के साथ सहयोग किया है। किसान अनुदान योजना के तहत अनुदान प्रदान किए जाने के लिए आवेदक को अपने जिले में स्थानांतरित लोन मेले में जाकर अपने आवेदन पत्र के साथ अपनी योग्यता मानदंडों के सभी सबूतों को जमा करना होगा।

योजना के अंतर्गत ऋण प्रदान करने की प्रक्रिया बहुत सरल है और उचित योग्यता मानदंडों को पूरा करने वाले किसानों को आसानी से इस योजना का लाभ मिलता है।

किसान अनुदान योजना के तहत मध्य प्रदेश सरकार ने किसानों को नवीनतम तकनीकी सहायता और खेती से संबंधित अन्य फायदे भी प्रदान किए हैं। इस योजना के अंतर्गत, किसानों को निम्नलिखित फायदे प्रदान किए जाते हैं-

खेती संबंधी सलाह और तकनीकी सहायता - योजना के तहत, किसानों को उनकी खेती से संबंधित जानकारी और सलाह के लिए समर्थित किया जाता है। सरकार की ओर से विशेषज्ञों के द्वारा खेती संबंधी सलाह और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

सब्सिडी प्राप्त करें - इस योजना के तहत, किसानों को कृषि उपकरणों और सामग्री जैसे बीज, खाद, कीटनाशक आदि के लिए सब्सिडी प्रदान की जाती है।

बोध कथा

एक गांव में समुद्र के तट पर रहने वाले मछुआरे अजीविका कमाने हेतु मछली पकड़ने के लिए अपनी नावें लेकर समुद्र में दूर-दूर तक निकल जाते थे। ऐसी स्थिति में एक दिन समुद्री तूफान आ गया। मछुआरों की नावें रास्ता भटक गईं। उनके परिजन समुद्र किनारे आकर उनकी कुशलता के लिए प्रार्थना करने लगे। वे सभी दुःखी थे। तभी एक और दुखद घटना घट गई। एक मछुआरे की झोपड़ी के ऊपरी कोने में आग लग गई। सब लोग उस तरफ भागे और उन्होंने आग बुझाई। देर होने के बाद सब थककर सो गए। सुबह हुई तो सभी मछुआरे समुद्र किनारे सकुशल आ चुके थे। झोंपड़ी की मालकिन अपने पति से बोली, देखो, यह क्या हो गया? भगवान को हम पर दया नही आई? यह सुनकर उसका पति शांत भाव से बोला, ईश्वर को धन्यवाद दो। रात को तूफान में जलती हुई झोपड़ी देखकर ही तो हम अपनी नावें किनारे पर लगा पाए। अगर ऐसा नहीं होता तो हम समुद्र में ही समा जाते। कभी-कभी ऐसी घटनाएं घट जाती हैं, तो खुद को कोसने के बजाय ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई है उनके आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है?

उत्तर - तितली

नारी शक्ति

श्रीमती प्रेम मंगल

शक्तिशाली है नारी जग में,
उसका मुकाबला कोई नहीं है।
हर क्षेत्र में अव्वल है वह,
सारे जग की पालनहारी है।

कितने रूपों में जीवन जीती,
बच्ची बनकर, बहना बनकर आती है।
नाजों से पलती जिस घर आँगन में,
छोड़ उसे दूजे घर को अपना बनाती है।

यही रीत बनाई विधाता ने है,
पत्नि, भाभी, बहू कितने रूप उसके हो जाते हैं।
हर रूप में खरी उतरने की,
कठिन परीक्षा देनी पड़ती है।

पर है यह बड़ी विडंबना,
कमजोर कड़ी भी उसकी नारी है।
ईर्ष्या द्वेष नारी का इक दूजे से,
आदिकाल से ही बड़ा चर्चित है।

गर यह कमजोरी न होती,
तो रामायण न बनती।
गर नारी में ईर्ष्या न होती,
महाभारत की रचना न होती।
शक्तिशाली है नारी जग में,
उसका मुकाबला कोई नहीं है।

वर्मी कांपोस्ट और वर्मीवाश आज के किसान के लिए नया बिजनेस

डॉ. जितेन्द्र सिंह, प्रोफेसर,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

किसान भाइयों को अपनी खेती में कम लागत से अच्छी फसल की पैदावार के लिए जैविक खेती करनी चाहिए जिससे उनकी फसल की लागत भी कम हो जाएगी और उत्पादन भी अधिक होगा। किसान अपनी फसल में रासायनिक खाद का प्रयोग करते हैं जो कि जैविक खाद की तुलना में काफी महंगा पड़ता है। कुछ आसान विधियों से वर्मी कम्पोस्ट घर पर ही बना सकते हैं।

गाय के गोबर को पोषण का सर्वाधिक श्रेष्ठ विकल्प माना जाता हैं जिसमे पौधों के लिए आवश्यक सभी सूक्ष्म तत्व संतुलित मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। इन सूक्ष्म तत्वों को पौधे या फसलें बड़ी आसानी से अवशोषित कर लेती हैं। गोबर में उपस्थित सूक्ष्मजीव मृदा में उपस्थित जैव-भार के विघटन का भी कार्य करते हैं। खाद बनाने के लिए आजकल कई विधियां प्रचलन में हैं इनमे से कम्पोस्ट, नाडेप या वर्मी कम्पोस्ट प्रमुख हैं।

प्रचलन में है वर्मी कम्पोस्ट विधि

वर्मी कम्पोस्ट विधि का प्रचलन अन्य विधियों की तुलना में कही अधिक है। इस विधि में खाद का निर्माण अपेक्षाकृत कम समय में हो जाता है। इस विधि से प्राप्त खाद की गुणवत्ता भी अधिक होती है। वर्मी कम्पोस्ट विधि से प्राप्त खाद का भण्डारण भी ज्यादा सहजता से किया जा सकता है। इन सब कारणों से इस विधि के प्रति किसानों में स्वतः ही आकर्षण उत्पन्न हो रहा है।

वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधियां

पेड़ विधि

पेड़ के चारों ओर गोबर गोलाई में डाला जाता है। हर रोज गोबर को डालकर धीरे-धीरे इस गोल चक्र को पूरा किया जाता है। पहली बार प्रक्रिया शुरू करते समय गोबर के ढेर में थोड़े से केंचुए डाल कर गोबर को जूट के बोरे से ढक दिया जाता है। नमी के लिए बोरे के ऊपर समय-समय पर पानी का छिड़काव किया जाता है। केंचुए डाले गए गोबर को खाते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाते हैं और अपने पीछे वर्मी कम्पोस्ट बना कर छोड़ते जाते हैं। इस तैयार वर्मी कम्पोस्ट को इकठ्ठा करके बोरों में भरकर रख लिया जाता है।

बेड विधि

जगह पर जमीन के ऊपर 2-3 फुट की चौड़ाई और अपनी आवश्यकता के अनुरूप लम्बाई के बेड बनाये जाते हैं। इन बेड़ों का निर्माण गाय-भैंस के गोबर, जानवरों के नीचे बिछाए गए घास-फूस खरपतवार के अवशेष आदि से किया जाता है। ढेर की ऊंचाई लगभग लगभग 01 फुट तक रखी जाती है। बेड के ऊपर पुवाल और घास डालकर ढक दिया जाता है। एक बेड का निर्माण हो जाने पर उसके बगल में दूसरे उसके बाद तीसरे बेड बनाते हुए जरूरत के अनुसार कई बेड बनाये जा सकते हैं। शुरुआत में पहले बेड में केंचुए डालने होते हैं जो कि उस बेड में उपस्थित गोबर और जैव-भार को खाद में परिवर्तित कर देते हैं। एक बेड का खाद बन जाने के बाद केंचुए स्वतः ही दूसरे बेड में पहुंच जाते हैं। इसके बाद पहले बेड से वर्मी कम्पोस्ट अलग करके छानकर भंडारित कर लिया जाता है तथा पुनः इस पर गोबर आदि का ढेर लगाकर बेड बना लेते हैं।

टटिया विधि

प्लास्टिक की बोरी या तिरपाल से बांस के माध्यम से टटिया बनाकर वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण किया जाता है। इस विधि में प्लास्टिक की बोरियों को खोलकर कई को मिलाकर सिलाई की जाती है। फिर बांस या लट्ठे के सहारे चारों ओर से सहारा देकर गोलाई में रखकर उसमें गोबर डाल दिया जाता है। गोबर में केंचुए डालकर टटिया विधि से वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण किया जाता है। जिसमें लागत न के बराबर आती है।

प्रभातफेरियाँ

अमन व्यास

बड़ी-बड़ी संस्थाएं, विभिन्न विषयों पर शोध और सर्वे करती हैं। किसी संस्था को ऐसे गांवों पर भी शोध करना चाहिए, जहां प्रभातफेरी निकलती हों। क्योंकि जिन गांवों में प्रभातफेरी निकलती हैं, वहां आपसी झगड़ों की समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। प्रभात फेरी मन मिलाती है। प्रभात फेरी के समापन पर मंदिर में बैठने वाले ग्रामीण, गांव की समस्याओं, अच्छाइयों पर संवाद करते हैं और वह अत्यंत सकारात्मक वातावरण में होता है। उस संवाद से नवनीत ही निकलना होता है।

संघ में शाखा प्रणाली के पीछे का कारण भी तो यही है कि समाज दिन में एक बार मिले और गली में, देश में, दुनिया में क्या चल रहा, हमारी उस पर भूमिका क्या है? यह तय हो सके। अब संघ असफल है, ऐसा तो कोई नहीं कह सकता। प्रभातफेरियां भी अत्यंत सफल हैं, उपयोगी हैं।

चार बरस पहले मंदसौर के एक गांव की प्रभातफेरी में संयोग से चले गए थे। एक व्यक्ति कई दिनों से प्रभातफेरी में नहीं आ रहा था। प्रभातफेरी के दौरान जब उसका घर आया तो ग्रामीण वहीं रुककर ढ़ोल-मजीरे बजाने लगे। वह व्यक्ति बाहर आया, प्रभातफेरी में सम्मिलित हुआ। प्रभात फेरी के समापन पर मंदिर में उससे, अन्य ग्रामीणों ने इतने दिनों तक प्रभात फेरी में न आ पाने का कारण पूछा। उसने अपनी निजी समस्या बताई, ग्रामीणों ने उस पर विचार -विमर्श किया और जैसे-जैसे सूर्यदेव उदित हो रहे थे, ग्रामीणों के सहयोग से उस बेचारे की समस्या अस्त हो रही थी। यदि प्रभातफेरी न होती, तो इस तरह का परिणाम आना लगभग असंभव था।

भारत गांवों का देश रहा है। गांवों ने अपनी समस्याओं के सारे हल खोज लिए थे। आज भी पुलिस-कोर्ट-कचहरी में जाना हम इसलिए अपमानजनक समझते हैं, क्योंकि हमारे पुरखों ने सभी समस्याएं आपसी संवाद से हल करने का सफल तरीका निकाल लिया था। भारत को अपना प्रभात करना है तो प्रभातफेरियां पुनः जीवित करनी होंगी।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

नईपीढ़ी को आयरन मैन की काल्पनिक सुपरपावर जानने से अधिक महाराणा प्रताप की सुपरपावर जानने की आवश्यकता है

इशु शर्मा

भारत के इतिहास में कई महान योद्धाओं ने जन्म लिया जिनका नाम आज भी भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाता है। हमारी देश की स्वतंत्रता इन्हीं योद्धाओं के बलिदान के कारण हुई क्योंकि भारत का स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटिश काल से नहीं बल्कि मुगल काल से ही चलता आ रहा है। अगर इन योद्धाओं की दृढ़ता और वीरता की बात की जाए तो हर भारतीय की जुबान पर सबसे पहला नाम मेवाड़ के शेर महाराणा प्रताप का ही होता है। महाराणा प्रताप उदयपुर, मेवाड़ में सिसौदिया राजवंश के राजपूत साम्राज्य के एक योद्धा और शासक थे जिन्हें भारतीय इतिहास में साहस, वीरता और देशभक्ति का प्रतीक माना जाता है। उन्होंने कई वर्ष भारत की गरिमा को बचाने के लिए मुगल साम्राज्य से संघर्ष किया और अपनी शातिर युद्ध रणनीति से मुगलों को कई युद्धों में मुंहतोड़ जवाब भी दिया।

महाराणा प्रताप का जन्म मेवाड़ के छोटे से कस्बे कुंभलगढ़ दुर्ग में 9 मई 1540 को हुआ जिनके पिता मेवाड़ के राजा राणा उदय सिंह द्वितीय थे जिसकी राजधानी चित्तौड़ थी। हर माँ की तरह महाराणा प्रताप की माँ महारानी जयवंता बाई उनकी गुरु थीं जिनकी शिक्षा के कारण वह बचपन से ही शूरवीर, निडर, स्वाभिमानी और स्वतंत्रता प्रेमी थे। इन सिद्धांतों के कारण महाराणा प्रताप ने मुगलों के शासन के खिलाफ कई युद्ध लड़े।

मुगल शासन और अकबर की चालाकी के कारण राजपूत परिवार में कई आपसी युद्ध हुए जिसकी वजह से राणा उदय सिंह द्वितीय और उनके परिवार को अपने राज्य को त्याग कर पहाड़ियों की ओर भागने पर मजबूर होना पड़ा। महाराणा प्रताप जो उस समय केवल 28 वर्ष के थे उन्होंने हार स्वीकार करने से इनकार कर दिया और मुगलों से अपने राज्य को पुनः प्राप्त करने की शपथ ली। प्रताप ने युद्ध की रणनीति की शुरुआत पहाड़ियों में अपने सत्ता के आधार को मजबूत करने और विभिन्न राजपूत वंशों से समर्थन जुटाने के साथ की। उन्होंने अन्य क्षेत्रीय राज्यों के साथ भी गठबंधन किया जो मुगल शासन का विरोध में थे। उनकी सेना छोटी थी लेकिन अत्यधिक अनुशासित और उनके प्रति बेहद वफादार थी।

प्रताप ने मुगलों के खिलाफ पहली लड़ाई 18 जून 1567 को राजस्थान की पहाड़ी हल्दीघाटी के पास लड़ी जिसमें प्रताप की सेना का नेतृत्व सरदार हाकिम खान ने किया और दूसरी ओर मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह व आसफ खाँ ने किया था। यह युद्ध भारतीय इतिहास का प्रमुख युद्धों में से एक है क्योंकि प्रताप की कुल 20,000 राजपूतों की सेना ने 80,000 मुगलों के खिलाफ युद्ध लड़ा था। हालाँकि इस युद्ध में कोई विजय नहीं हुआ पर छोटी सेना होने के बाद भी प्रताप ने अपने दृढ संकल्प के साथ पूरे साहस से मुगलों के खिलाफ युद्ध किया। साथ ही महाराणा प्रताप के प्रिय घोड़े चेतक की मृत्यु भी इसी युद्ध में हुई।

अपनी कई जीत के बावजूद, प्रताप कभी भी चित्तौड़ को मुगलों से आजाद नहीं कर पाए पर उन्होंने हमेशा मेवाड़ की स्वतंत्रता और संप्रभुता को बनाए रखने का प्रबंधन किया जो उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात थी। साहस, सम्मान और बलिदान का जीवन व्यतीत करते हुए 57 वर्ष की आयु में 1597 में उनकी मृत्यु हो गई।

आज की जनरेशन के दौर में युवाओं को महाराणा प्रताप के सिद्धांत को अपनाना चाहिए। प्रताप के सिद्धांत एक आदर्शवादी राज्य से ज्यादा स्वयं के व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। साथ ही एक अच्छे करियर और सेहतमंद मानसिक स्वास्थ्य के लिए महाराणा प्रताप की तरह अच्छा नेतृत्व और मजबूत दृढ संकल्प होना बहुत आवश्यक है। भारत सरकार ने भले ही एनसीईआरटी की किताब से मुगल शासन का अध्याय हटा दिया हो पर सरकार को युवाओं के लिए प्रताप के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को उभारना बहुत आवश्यक है।

सुपर हीरो आयरन मैन और डॉ. स्ट्रेंज की काल्पनिक सुपरपावर जानने की जगह हमारी पीढ़ी को इन महान योद्धाओं की वास्तविक सुपरपावर जानना ज्यादा आवश्यक है। साथ ही सिनेमा में ऐतिहासिक फिल्म में ग्लैमर और मनोरंजन दर्शाना से ज्यादा आवश्यक इन महान योद्धाओं के सिद्धांतों को दर्शना है। प्रताप काफी वीर व एक अनुशासित योद्धा थे और ये सभी विशेषताएं उन्होंने अपने परिवार द्वारा दी गई शिक्षा के जरिए हासिल की।

पर्यावरण संतुलन के लिए महत्वपूर्ण महासागरीय जैव विविधता

कुलदीप नागेश्वर पवार

भारत में 14.2 प्रतिशत जनसंख्या 69 जनपदों में समुद्र के समीप रहती है। भारत दुनिया में 20वां सबसे बड़ा समुद्री देश है। भारत में पश्चिम में गुजरात के नीचे से जाते हुए कोंकण, फिर मालाबार और कन्याकुमारी से ऊपर की ओर घूमते हुए कोरोमण्डल और आगे बंगाल के सुंदरवन तक लगभग 5600 किलोमीटर समुद्र तट है। करोड़ों लोगों की आजीविका का साधन समुद्र से उपजी मछली एवं अन्य उत्पाद ही हैं। लेकिन विडंबना है कि समुद्र तटों का पर्यावरणीय संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। हमारी ही लापरवाही का परिणाम है कि अब सागर की अथाह जलराशि में जल की जगह प्लास्टिक का आधिपत्य है। लगभग 5.5 लाख करोड़ टन प्लास्टिक परत समुद्र में द्वीप की शक्ल में तैरते नजर आ जाते हैं। जो हवा के रुख के हिसाब से बनते और बिखरते रहते हैं। आशंका है कि यदि यही स्थिति रही तो 2050 तक समुद्र में मछलियों से ज्यादा प्लास्टिक नजर आएगा। प्लास्टिक कचरे का मुद्दा पर्यावरण के लिए विश्व के समक्ष गंभीर चुनौती बनकर खड़ा है, समुद्र में तैर रहे मानव सर्जित कचरे में 80 प्रतिशत प्लास्टिक है जिसका अनुमानित भार 10 करोड़ टन है। प्लास्टिक कचरा समुद्री जल का रासायनिक स्वरूप बदल कर उसकी अम्लीयता बढ़ा रहा है, इससे तटीय शैवाल भित्ति को क्षति पहुंच रही है जिसका परिणाम अत्यंत कोमल समुद्री खाद्य श्रृंखला को भुगतना पड़ रहा है। प्लास्टिक कचरे का यह सैलाब समुद्री धारा और हवाओं के रूख से प्रभावित होकर जुड़ता एवं बिखरता रहता है।

इस कचरे में फंसने, दम घुटने और इसे निगलने से अनेक समुद्री जीव प्रभावित हो रहे हैं। 2017 अगस्त में भारत के तमिलनाडु राज्य के पंबन दक्षिणी तट के किनारे 18 फुट लंबी व्हेल शार्क मछली मरी हुई मिली थी, जब उसके शव का परीक्षण किया गया तो वन्यजीव अधिकारियों को उसके पाचन तंत्र में प्लास्टिक की चम्मच फंसी हुई मिली थी। अधिकारियों का कहना था कि समुद्र में कुछ खाते हुए प्लास्टिक की चम्मच व्हेल शार्क के शरीर में चला गया होगा। समुद्र के पर्यावरणीय तंत्र में समुद्री जीव सबसे महत्वपूर्ण हैं, दुर्भाग्यवश यह प्लास्टिक कचरा इस जीव जगत के लिए काल बना हुआ है। समुद्री जीव प्लास्टिक वस्तुओं को गलती से निगल लेते हैं जिससे इन जीवों की आहार नली अवरुद्ध हो जाती है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार प्लास्टिक पानी में विखंडित होकर छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जाता है, जिन्हें देखा नहीं जा सकता। यह माइक्रोप्लास्टिक समुद्री पर्यावरण के लिए बहुत घातक है। माइक्रोप्लास्टिक्स शब्द का प्रयोग वर्ष 2004 में पर्यावरण वैज्ञानिक रिचर्ड थॉप सन ने किया था। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि समुद्री जीव एक सामान्य पॉलीथिन थैली के 10 लाख माइक्रोस्कोपिक टुकड़े कर सकते हैं। जब यह

माइक्रोप्लास्टिक के टुकड़े समुद्री जीवों के आहार का हिस्सा बनते हैं तो यह उनकी मौत का कारण बनते हैं, साथ ही समुद्री जीवों के भोजन पर निर्भर जनसंख्या का बड़ा भाग भी इस प्लास्टिक को अप्रत्यक्ष रूप से खा रहा है। केवल समुद्री भोजन ही नहीं बल्कि समुद्र तट से मिलने वाले नमक में भी प्लास्टिक कण मिले हुए रहते हैं। प्लास्टिक कणों का मछलियों की प्रजनन क्षमता पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। माइक्रो प्लास्टिक के बारे में अभी जागरूकता बहुत कम है वैज्ञानिक अभी इसे और अधिक जानने का प्रयास कर रहे हैं। माइक्रो प्लास्टिक को हम आंखों से नहीं देख पाते इसलिए इसकी पहचान कर पाना मुश्किल है।

दुनिया भर के लोग नलों से आ रहे पानी के साथ-साथ प्लास्टिक के सूक्ष्म कण भी पी रहे हैं। ग्रीन पीस के एक पोत ने अंटार्कटिका महाद्वीप से पानी के 17 नमूने लिए थे जिसमें से 9 में प्लास्टिक के सूक्ष्म कण पाए गए थे। भारत सहित 14 देशों के पीने के पानी पर किए गए विश्लेषण में पाया गया कि 83 प्रतिशत पीने के पानी में प्लास्टिक के सूक्ष्म कण उपस्थित हैं।

अयोध्या : 156 नदियों के जल से हुआ श्रीराम जन्मभूमि पर निर्माणाधीन मंदिर का अभिषेक......

दुनिया के 156 देशों की नदियों, समुद्र के जल से रविवार को श्रीराम जन्मभूमि पर निर्माणाधीन मंदिर की चौखट का भव्य अभिषेक किया गया। इस समारोह में दिल्ली स्टडी ग्रुप के अध्यक्ष विजय जौली के संयोजन में अपने-अपने देशों की पवित्र नदियों का पवित्र जल लेकर 156 देशों के प्रतिनिधि, 13 देशों के राजदूत, 40 देशों के अप्रवासी भारतीय रामनगरी में श्रीरामजन्म भूमि पहुंचे थे।

नेपाल, पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान (जहां आक्रांता बाबर का जन्म हुआ था), डेनमार्क, भूटान, रोमानिया, ग्रीस, मंगोलिया, अमेरिका, अल्बानिया सहित कुल 156 देशों के जल को एकत्र कर एक अभियान के रुप में अग्रवाल समाज के लोगों द्वारा सामूहिक रूप से अयोध्या लाया गया। अभियान के जुड़े प्रमुख, विशिष्ट लोगों ने रविवार को मणिराम छावनी के विशाल सभागार में अपने विचार रखकर इस कार्यक्रम के औचित्य को परिभाषित किया। समारोह में सबसे पहले हनुमान चालीसा पढ़ी गई। समारोह को संबोधित करते हुए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव एवं विहिप उपाध्यक्ष चंपत राय ने कहा कि राम जन्मभूमि में पांच अगस्त 2020

को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर का भूमि पूजन किया। इस अवसर पर देश के एक हजार स्थलों से जल और मिट्टी राम मंदिर की भूमि पर विसर्जित की गई थी। इसी घटना से प्रेरित होकर दिल्ली स्टडी ग्रुप के अध्यक्ष विजय जौली ने राम मंदिर अभिषेक के लिए दुनिया के 156 देशों का जल एकत्रित किया, जो अत्यंत प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि आज जिन्होंने जल भेजा है, उन्हें ट्रस्ट के संतों की तरफ से सम्मान। यह आयोजन इंटरनेशनल हिस्ट्री है।

मध्य प्रदेश में कट्टरता बर्दाश्त नहीं की जाएगी, अवैध रूप से चल रहे मदरसों और संस्थानों का होगा रिव्यू......

भोपाल। मध्य प्रदेश में काफी समय से अवैध रूप से चल रहे मदरसों और अन्य संस्थानों में कट्टरता का पाठ पढ़ाने एवं कन्वर्जन (मतान्तरण) करने की शिकायतें आ रही हैं। इसे लेकर पिछले कुछ समय से राष्ट्रीय एवं राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर-एससीपीसीआर) भी काफी सक्रिय नजर आ रहा है। अब तक जिन भी अल्पसंख्यक संस्थानों में बाल आयोग का जाना हुआ, वहां तमाम गड़बड़ियां पकड़ में आई हैं। कहीं अल्पसंख्यक संस्थानों में शराब, कॉन्डम मिल रहे हैं तो कहीं मानव भ्रूण, बिना

मान्यता, डायवर्जन के स्कूल संचालन, धर्मांतरण का सामान और तालिमुल इस्लाम जैसी किताबें जिससे कि साफ नजर आ रहा है कि कैसे बिना किसी भय के राज्य में **मध्यप्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम - 2021** का मखौल उड़ाया जा रहा है। ऐसे में अब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी इस प्रकार की सभी संस्थाओं के प्रति सख्ती बरतने का निर्णय लिया है। जिसके संकेत उन्होंने दिए हैं।

भारतीय समाज समलैंगिक विवाह से पूर्णत असहमत

इन्दौर में शहर की विभिन्न सामाजिक संगठनों की लगभग 2500 मातृशक्ति की उपस्थिति में 650 महिलाओं द्वारा हस्ताक्षरित तथा महामहिम राष्ट्रपतिजी, प्रधानमंत्री जी व सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को संबोधित ज्ञापन इन्दौर कलेक्टर श्री टी इल्लैयाराजा को सौंपा।

ज्ञापन के माध्यम से समाज ने अपनी चिन्ता व निम्न बिंदुओं पर आपत्ति व्यक्त की -

1. भारत ही नहीं सभी एशियाई देशों में विवाह कानूनी कांट्रेक्ट नहीं अपितु संस्कार है। यह दो शरीरों का मिलन नहीं दो परिवारों का विस्तार है। यह भारत की परिवार व्यवस्था ही है जिसके कारण सैकडों विदेशी आघातों के बाद भी भारतीय परंपरा व संस्कृति जीवित है। अंग्रेजों और वामपंथियों द्वारा हुए सांस्कृतिक हमलों षड्यंत्रों के बाद भी भारतीय समाज अपनी अस्मिता की रक्षा करता हुआ संगठित है। इसी प्राचीन परिवार व्यवस्था को छिन्नभिन्न करने की साजिश सर्वोच्च न्यायालय की आड में की जा रही है।

2. माननीय सर्वोच्च न्यायालय की व्याख्या करने की संवैधानिक शक्ति का सम्मान करते हुए हम ये विनम्रता से कहना चाहते है कि समलैंगिक विवाह को मान्यता देना एक कानूनी मुददे के साथ साथ एक जटिल सामाजिक मुद्दा भी है अतः हमारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय से केवल इतना निवेदन है कि इस जटिल मुददे पर जनता द्वारा चुने गए जन प्रतिनिधियों के माध्यम से केवल विधायिका को ही निर्णय लेने दिया जाए साथ ही समाज के विभिन्न समूहों व सामाजिक -धार्मिक नेतृत्व से गंभीर विचार -विमर्श के उपरान्त ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाए।

3. स्पेशल मैरिज एक्ट के साथ साथ कई और प्रचलित कानूनों में बदलाव करना होंगे जो कि अपने आप में एक बड़ा काम होगा। उदाहरण के लिए जिन-जिन कानूनों में महिलाओं को लिंग के आधार संरक्षण दिया गया है वह संरक्षण समलैंगिक जोड़ों में से किसको मिलेगा विशेष कर घरेलु हिंसा से महिलाओं का सरंक्षण अधिनियम ऐसे ही दत्तक ग्रहण कानून जो किसी पुरुष को किसी बालिका को गोद लेने से प्रतिबंधित करता है।

4. सामाजिक स्तर पर भी समलैंगिक विवाह को मान्यता हमारी स्थापित परिवार संस्था को विपरीत रूप से प्रभावित करेगी जब इस तरह के जोड़े अगर वैधानिक रूप से किसी बालक या बालिका को गोद लेते है एवं अपना परिवार बनते है तो उस बालक या बालिका के बाल मन एवं मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा जिससे आगे चलकर वे समाज के प्रति आक्रोशित ही रहेगे। इस तरह हमारे समाज की स्थापित परिवार नामक संस्था पर एक कुठाराघात होगा इस तरह से यह विषय गंभीर प्रकृति का होकर किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं हैं, ऐसे विषय पर देश के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सुनवाई की जल्दबाजी अनेक संदेहो को जन्म देती है।

हमें पूरे समाज का संगठन करना है, समाज में अपना अलग संगठन खड़ा नहीं करना -: डॉ मोहन भागवत जी

ब्रह्मपुर (खंडवा)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी ने ब्रह्मपुर (बुरहानपुर) में नवनिर्मित डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति के जिला कार्यालय का उद्घाटन किया, इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित समाजजनों और संघ के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि संघ, सम्पूर्ण समाज को अपना मानता है। एक दिन संघ बढ़ते-बढ़ते समाजरूप हो जाएगा तो संघ यह नाम भी हट जाएगा, हिंदू समाज ही संघ बन जाएगा। इसलिए यह कार्यालय हिंदू समाज का केंद्र है। यह समाज के सहयोग से खड़ा हुआ है और समाज को ही समर्पित है।

इंदौर में मुस्लिम युवकों का हिंदू महिलाओं पर हमला, मददगारों को भी डंडों से पीटा, सात वर्षीय हिन्दू बिटिया को भी मारा

बंबई बाजार के सामने मुस्लिम युवकों ने हिंदू परिवार की महिलाओं के साथ मारपीट कर दी। घायलों की मदद करने आए स्वजन और अन्य पुरुषों को भी बेरहमी से पीटा गया। इस घटना से बंबई बाजार, जवाहर मार्ग, बजाजखाना चौक में हड़कंप मच गया। सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं को थाने पहुंचना पड़ा।

प्रतिकात्मक चित्र

घटना दोपहर करीब साढ़े तीन बजे बंबई बाजार पुलिस चौकी के सामने जवाहर मार्ग की है। जगजीवनराम नगर निवासी शिपिका वर्मा, बहन नेहा के साथ खरीदारी करने गई थी। लौटते वक्त जवाहर मार्ग पर नेहा की सात वर्षीय बेटी तनवी ने सड़क पर रखे बैनर पर पैर रख दिया। दुकानदार अलताफ ने महिलाओं से अभद्रता की और तनवी को पीट दिया। वह बच्ची का हाथ पकड़कर अंदर ले जाने लगा। विरोध करने पर महिलाओं पर भी हाथ उठाया। पति साथियों के साथ बचाने पहुंचा तो उन्हें भी पीटा।

शिपिका ने पति सचिन वर्मा को कॉल कर घटना बताई। सचिन साथी दिनेश राजौरे, सन्नी आदि के साथ मौके पर पहुंचा तो अलताफ के साथी भी आ गए। आरोपितों ने डंडे निकालकर सभी को पीट दिया। अलताफ ने कपड़ा काटने वाला छुरा उठा लिया। हमले में दिनेश की अंगुली टूट गई, जबकि सचिन, सन्नी, शिपिका को भी चोट आई है। जोन-4 के एडिशनल डीसीपी अभिनय विश्वकर्मा के मुताबिक अलताफ को गिरफ्तार कर लिया है। वीडियो फुटेज के आधार पर अन्य आरोपितों की शिनाख्त कर रहे है।

संघ के विरुद्ध भ्रामक पोस्ट चलाने वाले माइकल के खिलाफ हिंदुओं ने करवाई FIR दर्ज

विश्व संवाद केन्द्र मालवा, इंदौर। इंदौर का रहने वाला सन्नु माइकल, बार-बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में भ्रामक व झूठी पोस्ट डाल रहा था तथा इसके माध्यम से समाज में वैमनस्य फैलाने व संघ की छवि को धूमिल करने का कार्य कर रहा था।

हाल ही में माइकल ने 2012 में घटी एक घटना को, हाल ही का बताकर तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया और अपने फेसबुक और व्हाट्सअप समूह पर उसे प्रसारित किया।

इस घटना से समाज और संघ के स्वयंसेवकों की भावनाएं आहत हुईं और लसूड़िया थाने पर बड़ी संख्या में नागरिकों ने उपस्थित होकर माइकल के विरुद्ध एफआईआर दर्ज करवाई।

यहां एक बात और सामने आ रही है माइकल, कन्वर्ट होकर ईसाई हो गया है, तथा वह मिशनरियों के इशारों पर हिंदुओं में संघ के प्रति सम्मान घटे और दुर्भावना फैले, इस हेतु वह सोशल मीडिया पर लगातार कार्य कर रहा है।

भारतीय समाज समलैंगिक विवाह से पूर्णत असहमत

खरगोन नगर में समलैंगिक विवाह कानून के विरोध में ज्ञापन।

जिला ब्रह्मपुर में समलैंगिक विवाह कानून के विरोध में ज्ञापन।

मंदसौर में समलैंगिक विवाह के विरोध में महिलाओं ने किया प्रदर्शन।

धार जिला में समलैंगिक विवाह कानून के विरोध में ज्ञापन।

उज्जैन में समलैंगिक विवाह कानून के विरोध में ज्ञापन।

बड़वानी जिला में समलैंगिक विवाह कानून के विरोध में ज्ञापन।

इन्दौर में शहर की विभिन्न सामाजिक संगठनों की लगभग 2500 मातृशक्ति की उपस्थिति में 650 महिलाओं द्वारा हस्ताक्षरित तथा महामहिम राष्ट्रपति जी , प्रधानमंत्री जी व सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को संबोधित ज्ञापन इन्दौर कलेक्टर श्री टी इल्लैयाराजा को सौंपा।

इन्दौर स्थित राजवाड़ा

जून माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 02 हिन्दू साम्राज्य दिवस
ता. 04 संत कबीर जयंती
ता. 09 बिरसा मुण्डा शहीद दिवस
ता. 18 महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस
ता. 20 भगवान जगदीश रथयात्रा
ता. 21 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
ता. 23 डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पुण्यतिथि
ता. 24 रानी दुर्गावती बलिदान दिवस

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341